International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 27-03-2022, Accepted: 13-04-2022, Published: 28-04-2022
Volume 8, Issue 2, 2022, Page No. 71-75

भारतीय समाज और स्त्री उद्यमिताः दशा एवं दिशा

लया एन
शोधार्थी, हिंदी विभाग, पॉन्डिचेरी विश्वविद्यालय, पुडुचेरी, भारत

सारांश
भारतीय समाज पितृसत्तात्मक समाज है। पितृसत्तात्मक समाज में स्त्री पुरुष के अधीन होती है। उसे समाज के हाशिये पर रखा जाता है और घर के भीतर। यही कारण है कि स्त्री पुरुष समाज द्वारा शोषित होती रही है। आधुनिक काल में नवजागरण के दौरान स्त्री समाज भी अपने अस्तित्व के प्रति जाग्रत हुआ। उसमें शिक्षा का प्रसार हुआ जिसके कारण वह घर चहारदीवारी के बाहर निकली। स्वतंत्रता आन्दोलन में भाग लेने से लेकर जीवन के समस्त क्षेत्रों में अपनी उपस्थिति प्रस्तुत की। स्वतंत्रता के उपरांत महिला उद्यमिता औद्योगिक और कार्पोरेट क्षेत्र में सक्रियता और भागीदारी प्रस्तुत की। पुरुष प्रधान कॉर्पोरेट क्षेत्र में महिला समाज निरंतर पहचान बना रहा है। हाल में हुए सर्वेक्षणों से यह बात पता चलता है कि महिला उद्यमिता शनैः–शनैः अपना विस्तार कर रही है। पर महिला उद्यमिता की इस यात्रा में उसे पुरुष वर्चस्व के विरुद्ध अभी लम्बी लड़ाई लड़नी है।

मूल शब्दः महिला उद्यमिता, पितृसत्ता, आधुनिक, कार्पोरेट

प्रस्तावना
अपनी व्यापकता में स्त्री मानव समाज का आधा हिस्सा है। स्त्री–समाज मानव समाज का आधा हिस्सा होते हुए भी जीवन के व्यापक क्षेत्र में पुरुष – समाज से काफी पिछड़ा हुआ है। मानव समाज मुख्य रूप से पितृसत्तात्मक है। पितृसत्तात्मक समाज में पुरुष की स्थिति वर्चस्व की होती है जिसके कारण स्त्री को दोयम दर्जा का प्राणी माना जाता है। राहुल सांकृत्यायन की पुस्तक 'मानव समाज' के अनुसार आदिम समाज मातृसत्तात्मक था। इस समाज में स्त्री–पुरुष की सहभागिता परस्पर समानता की थी। कालांतर में मानव सभ्यता के विकास में संपत्ति संचय के साथ स्त्री का स्थान भी नीचे खिसका। राहुल सांकृत्यायन लिखते हैं दृ "जंगली मानव योद्धा और शिकारी होते हुए भी स्त्री के नीचे रहने में संतुष्ट थे, यद्यपि वह ज्यादा क्रूर और साहसी थे; किन्तु अपेक्षाकृत नरम स्वभाव वाला पशु–पालक मानव अब अपनी स्थिति को जानता था कि वह काफी स्थायी धन दृ पशुओं का स्वामी है, इसलिए उसने धीरे से स्त्री को सिंहासन से खिसका दिया और खुद समाज का नेता बन बैठा। स्त्री का स्थान अब पुरुष से निम्न हो गया, किन्तु वह उसके लिए शिकायत नहीं कर सकती थी।" मानव सभ्यता के विकास की इस कड़ी में स्त्री–जीवन का दायरा शनैः शनैः सिमटता गया जो कि स्त्री–जीवन के हजारों वर्ष के इतिहास में देखा जा सकता है।

पितृसत्तात्मक समाज किसी समाज की उस स्थिति का सूचक है जिसमें पुरुष नियंत्रक की स्थिति में होता है और स्त्री नियंत्रित की स्थिति में होती है। संपत्ति का मूल अधिकार पुरुषों के हाथ में आरक्षित होता है। पितृसत्तात्मक समाज में पुरुष समाज का व्यापक हिस्सेदार होता है जबकि स्त्री की सीमा घर की चौहद्दियों के मध्य होती है। डॉ. अमरनाथ पितृसत्तात्मक समाज की विशेषता को रेखांकित करते हुए लिखते हैंः

1. पितृसत्तात्मक समाज व्यवस्था में स्त्रियों के जीवन के प्रत्येक पक्ष पर पुरुषों का नियंत्रण होता है।
2. पितृसत्तात्मक समाज व्यवस्था में उत्तराधिकार में संपत्ति का हस्तांतरण पुरुषों से पुरुषों के बीच में होता है।
3. पितृसत्तात्मक समाज में स्त्री की यौनिकता और श्रम–शक्ति पर पुरुष का नियंत्रण होता है।
4. पूँजीवादी पितृसत्तात्मक समाज व्यवस्था ने स्त्री को उत्पाद के रूप में भी तब्दील कर दिया है।

मनु स्मृति भारतीय समाज को व्यवस्थित और नियंत्रित करने का प्रमुख ग्रन्थ है। इस ग्रन्थ को यदि भारतीय समाज का व्याकरण ग्रन्थ कहा जाय, अतिशयोक्ति नहीं होगी। मनुस्मृति की रचना सैकड़ों वर्ष पूर्व में हुई थी। यह स्मृति भारतीय समाज में रहने वाले लोगों को उनके अधिकार, संस्कार तथा स्थान के विषय में बताती है। भारतीय समाज की स्त्री के सन्दर्भ में मनुस्मृति में कई व्यवस्थाओं को निरुपित किया गया है। मनुस्मृति में स्त्री को पुरुष अधीन बताया गया है। स्त्री की स्वतंत्र सत्ता मनुस्मृतिकार को स्वीकार्य नहीं है। मनुस्मृति में इस सन्दर्भ में लिखा गया हैः

अस्वतन्त्राः स्त्रियः कार्याः पुरुषैः स्वैर्दिवानिशम्।
विषयेषु च सज्जन्त्य रू संस्थाप्या रू आत्मनोवशे ।।2।।9[3] अर्थात् पुरुषों (पतियों) को विषयों में आसक्त अपनी स्त्रियों को सदैव दिन–रात अपने वश में रखना चाहिए। उक्त श्लोक में यह बात उल्लेखनीय है कि इसमें स्त्री को विषयों में आसक्त बताया गया है। प्रकारांतर से इस श्लोक में स्त्री–यौनिकता का नियंत्रण प्रश्न ही मुख्य है और स्त्री–यौनिकता को पुरुष पति द्वारा नियंत्रित किया जाना मुख्य कार्य है। मनुस्मृतिकार स्त्री–नियंत्रण को लेकर आगे के श्लोक में और अधिक मुखर होकर लिखता है

पिता रक्षति कौमारे भर्ता रक्षति यौवने।

रक्षन्ति स्थविरे पुत्रा रू न स्त्री स्वातन्त्र्यमर्हति॥3\\9[4] अर्थात् स्त्री की बाल्यावस्था, युवावस्था और वृद्धावस्था में क्रमशः पिता, पति और पुत्र रक्षा करते हैं, अर्थात् वह उनके अधीन रहती है और उसे अधीन ही बने रहना चाहिए क्योंकि वह कभी स्वतंत्रता के नहीं है। स्त्री–यौनिकता को नियंत्रित करने के लिए मनुस्मृतिकार विशेष रूप से सजग दिखाई देता है। स्त्री–यौनिकता पर नियंत्रण के माध्यम से मनुस्मृति भारतीय समाज के पितृसत्तात्मक संरचना का शास्त्रीय पाठ तैयार करती है।

स्त्री को मनुस्मृति में काम के वशीभूत कहा गया है। स्त्री जीवन का उद्देश्य केवल पुरुष से यौन संसर्ग प्राप्त करना माना गया है। इस सन्दर्भ में मनुस्मृतिकार लिखता हैः

नैता रूपं परीक्षन्ते नासां वयसि संस्थितिः।

सुरूपं वा विरूपं वा पुमानित्येव भुञ्जते ।।14।9[5] अर्थात् ये स्त्रियाँ न तो पुरुष के रूप का और न ही उसकी आयु का विचार करती हैं, इन्हें तो केवल पुरुष के पुरुष होने से प्रयोजन है। यही कारण है कि पुरुष को पाते ही ये उससे भोग को प्रस्तुत हो जाती हैं।

स्त्री–यौनिकता पर पुरुष नियंत्रण स्थापित करके ही पितृसत्तात्मक स्थापित की जा सकती है। स्त्री–स्वातंत्र्य के लिए आवश्यक है कि वह भी पुरुष की भांति यौनिकता के प्रति कुंठाशील न हो। पुरुषप्रधान समाज स्त्री को दबाने के लिए और उसकी यौनिकता को नियंत्रित करने के लिए वैचारिक शास्त्रों का प्रयोग किया है। पुरुष के लिए स्त्री केवल देह बनी रहे इसके लिए उसने शास्त्रों निर्माण किया। राजेंद्र यादव इस तथ्य पर लिखते हैं रू "आदमी ने यह मान लिया है कि औरत शरीर है, सेक्स है, वहीँ से उसकी स्वन्त्रता की चेतना और स्वच्छंद व्यवहार पैदा होते हैं। इसलिए वह हर तरह से उसके सेक्स को नियंत्रित करना चाहता है। सामाजिक आचार–संहिताओं, यानी मनु और याज्ञवल्क्य स्मृतियों से लेकर व्यक्तिगत कामसूत्र तक औरत को बाँधने और जीतने की कलाएँ हैं।"[15]

पुरुष प्रधान समाज में स्त्री की पहचान देह केन्द्रित निर्मित की गयी है। स्त्री–देह का अधिकारी पुरुष है स्वयं स्त्री नहीं। स्त्री अपनी देह का उपभोग स्वयं की इच्छा से नहीं कर सकती है। स्त्री पितृसत्तात्मक समाज तभी तक रहने लायक जब तक वह अपना शरीर पुरुष की इच्छा से नियंत्रित करे। राजेंद्र यादव इस सन्दर्भ को रेखांकित करते हुए लिखते हैं दृ"देह, स्त्री की एकमात्र पहचान के रूप में उसका गुण भी है और गाली भी। जब तक वह पुरुष की इच्छा और वासना के नियंत्रण में है, वह सौन्दर्य है, उद्दीपन है और ऐसा अवयव–समूह है जो वांछनीय है, अगर उससे निरपेक्ष और उसके नियंत्रण से बाहर है तो भर्त्सनीय और दंडनीय है।"[16]

मनोरंजन और मीडिया उद्योग समाज की संरचना को लगातार प्रभावित कर रहा है। मनोरंजन उद्योग स्त्री–छवि को पुरुषवादी मानसिकता के अनुरूप निर्मित कर रहा है। मनोरंजन उद्योग में स्त्रियों का उत्पादीकरण सर्वाधिक हुआ है। उत्पादीकरण की इस प्रक्रिया में स्त्री–देह को सर्वाधिक उभारा गया है। उदाहरण के रूप में 'सेक्स कॉमेडी' और 'आइटम सांग' में स्त्री–देह बिम्बों को अधिक उभारा जाता है। इस सन्दर्भ में कृष्ण कुमार का विचार महत्वपूर्ण है दृ "आधुनिक मनोरंजन–उद्योग इस संस्कार को लगातार पोषण देता है और अपने नाना उपक्रमों से लड़के के मानस को घेरे रखता है। यह उद्योग स्त्री के वस्तुकरण और देह–बिम्बों के व्यापार पर टिका है। गीतों और संगीत में निबद्ध 'तू चीज़ बड़ी है मस्त–मस्त' या 'अमिया से आम हुई' जैसी पंक्तियाँ मनोरंजन उद्योग की विचारधारा का सूत्रबद्ध परिचय देती हैं। सिनेमा और टेलीविजन तथा अब इन्टरनेट के जरिये पुरुष की स्त्री–विजय की हजारों छवियाँ आज हर लड़के के लिए सुलभ हैं।" (चह–80)

आधुनिककाल के दौरान भारतीय समाज दोहरे संघर्ष से गुजरा। भारत में एक तरफ ब्रिटिश उपनिवेशवाद था तो दूसरी तरफ भारतीय समाज अपने आतंरिक सामंती–उपनिवेशवाद से संघर्ष कर रहा था। अंग्रेजों के आगमन के साथ भारत में नवीन चेतना का भी आगमन हुआ। इस नवीन चेतना का प्रभाव स्त्री जीवन पर भी पड़ा। भारतीय नारी अपनी स्थिति, परिवेश और अस्तित्व के प्रति जाग्रत हुई फलस्वरूप ब्रिटिश साम्राज्यवाद के संघर्ष में नारी की उपस्थिति नारी शक्ति के रूप में प्रस्तुत हुई। नारी समाज स्वतंत्र भारत में आज भी अपनी इस उपस्थिति को बनाये रखने के लिए संघर्षरत है। स्वतंत्र भारत में नारी की उपस्थिति जीवन के समस्त क्षेत्रों सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और साहित्यिक में है।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत ने आर्थिक क्षेत्र में महत्वपूर्ण उपलब्धि प्राप्त की। भारत में उद्योगों का विकास हुआ द्य भारत के औद्योगिक विकास ने भारत में कार्पोरेट के विकास संभव बनाया। कार्पोरेट जगत में महिलाओं की उपस्थिति एक महत्वपूर्ण तथ्य रहा है। इस उपस्थिति को लेकर कई शोध हुए हैं। महिलाओं की इस उपस्थिति को रेखांकित करते हुए ज्योत्स्ना सूरी (ज्योत्सना सूरी भारतीय वाणिज्य तथा उद्योग मंडल परिसंघ, फिक्की (ूपिबबप.बवउ) के अध्यक्ष हैं।) लिखती हैं – "विगत तीन दशकों में, महिलाओं ने कॉरपोरेट जगत में महत्वपूर्ण सफलता हासिल की है, सामाजिक नैतिकता की बाध्यताओं को पार करते हुए घर तथा कार्यस्थल पर स्वयं को सफल उद्यमी एवं कार्यकारी व्यावसायिकों के रूप में साबित किया है।"

कार्पोरेट जगत में महिलाओं के संघर्ष को रेखांकित करते हुए फिक्की महिला संगठन ने महिला उद्यमियों के जीवन और संघर्ष को सामने लाने के लिए एक पुस्तक प्रकाशित की है। यह पुस्तक भारत में महिला उद्यमियों के इतिहास प्रमाणिक दस्तावेज है। इस पुस्तक की अवधारणा और उद्देश्य के सन्दर्भ में लिखा गया है – "अप्रैल 2013 में, फिक्की महिला संगठन (एफ एल ओ) ने "सभी विषमताओं के विरूद्ध उद्यमिता" उपाधि प्राप्त 150 महिला उद्यमियों की कहानियों का एक संकलन प्रकाशित किया। ये कहानियां हमें यह बताती हैं कि कैसे इन महिलाओं ने संघर्ष करते हुए, बाधाओं से लड़ते हुए उद्यमिता के जगत, पुरूषों के अधिपत्य वाले उद्यमिता जगत, में अपनी महत्वपूर्ण उपस्थिति एवं स्थान दर्ज कराने में सफल हुई हैं। प्रत्येक कहानी महिलाओं के अटूट साहस, दृढ़ प्रतिज्ञा तथास्त्री शक्ति के उद्भूत सामर्थ्य को सही अर्थों में प्रतिबिम्बित करती हजिम्मेवारियों को अपने कंधे पर लेने वाली महिलाओं की संख्या पिछले कुछ वर्षों में काफी बढ़ी है। वैसे इनकी संख्या में धीरे–धीरे वृद्धि होने के बावजूद भारत में महिला उद्यमिता को अभी काफी लंबा रास्ता तय करना है।

आवश्यकता इस बात की है कि अधिक से अधिक महिलाओं को नया उद्यम आरंभ करने एवं संचालन कर सकने संबंधी उनकी क्षमताओं के प्रति उन्हें पूरी तरह आश्वस्त करने की है।"

ज्योत्सना सूरी ने अपनी इस रिपोर्ट में भारत के कार्पोरेट जगत में महिला हिस्सेदारी की भागीदारी को प्रस्तुत करते हुए लिखती हैं – "भारत में सफल महिला उद्यमियों के अनेकोनेक उदाहरण मिलते हैं। जैसेदृ राधा भाटिया (अध्यक्ष, बर्ड ग्रुप), मल्लिका श्रीनिवासन (अध्यक्ष तथा सीईओ, ट्रैक्टर्स एण्ड फार्म इक्विपमेंट), प्रिया पॉल (अध्यक्ष, एपीजय पार्क होटल्स), शाहनाज हुसैन (सीईओ, शाहनाज हर्बल्स इन्क), एकता कपूर (संयुक्त प्रबंध निदेशक, बालाजी टेलीफिल्म्स) और बहुराष्ट्रीय कंपनियों में उच्चतम मुकाम हासिल करने वाली महिलाएं जैसे इंद्रा कृष्णामूर्ति नूई (अध्यक्ष तथा मुख्य कार्यकारी अधिकारी पेपसिको), नैनालाल किदवई (समूह महाप्रबंधक तथा देश प्रमुख, एच एस बी सी इंडिया), चंद्राकोचर (सीईओ तथा प्रबंधक निदेशक आई सी आई सी बैंक)।"

महिला उद्यमियों ने अपने संघर्ष के माध्यम से पुरुष वर्चस्व के इस क्षेत्र में महत्वपूर्ण भागीदार कर रही हैं। कार्पोरेट और व्यापार जगत पर अधिकांशतः पुरुष वर्चस्व रहा है। ज्योत्सना सूरी का मानना है सम्पूर्ण विश्व में महिलाओं के सामने पुरुष आधिपत्य की चुनौती है। इस कारण महिला उद्यमियों को पुरुष उद्यमियों की अपेक्षा अधिक संकट और अड़चनों का सामना करना पड़ता है। ज्योत्सना सूरी लिखती हैं – "भले ही महिलाएं व्यवसाय के संचालन में समान रूप से सक्षम हैं, लेकिन महिला उद्यमी बनने की उनकी राह में अनेक सामाजिक और सांस्कृतिक अड़चनें हैं। इनमें सबसे प्रमुख न सिर्फ भारत में बल्कि पूरे विश्व में पुरूष अधिपत्य वाले कॉरपोरेट परिदृश्य का परंपरागत विचारधारा का होना है।" यही कारण है कि ज्योत्सना सूरी के अनुसार "महिला उद्यमिता को बढ़ावा देने हेतु बहुस्तरीय रणनीति की आवश्यकता है जिसमें विभिन्न स्टेकधारक नामतरू सरकार, वित्तीय संस्थाएं, विशेषज्ञ समूह, व्यवसाय एवं उद्योग संघ तथा महत्वपूर्ण रूप से सफल महिला उद्यमियां शामिल हैं। फिक्की में हम उद्यमीय जागरूकता, क्षमता निर्माण तथा कौशल विकास को सृजित करने के प्रति प्रयत्नरत हैं और कॉरपोरेट जगत में महिलाओं की शक्ति को परिलक्षित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं।"

कार्पोरेट जगत में महिला उद्यमिता की भागीदारी को जानने के लिए सर्वेक्षण होते रहते हैं। अभी प्रकाशित एक रिपोर्ट के अनुसार यह आकड़ा सामने आया है–"हाल ही में क्रेडिट सुइस नामक स्विस संगठन ने कॉरपोरेट जगत में महिलाओं की स्थिति पर एक विस्तृत रिपोर्ट जारी की है। रिपोर्ट बताती है कि पिछले पांच सालों में कंपनी की बोर्ड टीम में महिलाओं की भागीदारी में केवल 4.3 फीसदी का इजाफा हुआ है। वरिष्ठ प्रबंधन में महिलाओं की भागीदारी 2016 में महज 6.9 फीसदी थी। लेकिन, थोड़े इजाफे के साथ अब वह 8.5 फीसदी हो गई है।" इस रिपोर्ट से स्पष्ट है कि कार्पोरेट जगत में महिला भागीदारी बढ़ रही है। परन्तु यह प्रश्न भी विचारणीय है कि कार्पोरेट जगत के मुख्य पदों पर पुरुष वर्चस्व की ही प्रधानता है। इस सन्दर्भ में यह तथ्य विचारणीय है – "भारतीय कंपनियों में महिला सीईओ (मुख्य कार्यकारी अधिकारी) का प्रतिनिधित्व केवल दो फीसदी है, जबकि सीएफओ (मुख्य वित्तीय अधिकारी) के पद पर महिलाओं की भागीदारी महज एक फीसदी है।"

भारत सरकार कार्पोरेट जगत में महिला भागीदारी की बृद्धि हेतु प्रयासरत है। इस कदम हेतु सरकार ने स्पष्ट किया है – "जहां तक कॉरपोरेट जगत का सवाल है, तो भारत सरकार ने महिलाओं की भागीदारी बढ़ाने के लिए पहल की है। 2013 में व्यवसायों में महिलाओं की भागीदारी बढ़ाने के मकसद से कंपनी अधिनियम में इस बात को जरूरी किया गया था कि कंपनी के बोर्ड में कम–से–कम एक महिला डायरेक्टर हों। हालांकि, विशेषज्ञों का मानना है कि कंपनियों के बोर्ड में शामिल करीब 25 फीसदी महिलाएं प्रमोटर फैमिली की हैं।"

भारतीय कार्पोरेट जगत की प्रमुख महिलाएं

1. **शहनाज़ हुसैनः** शहनाज हुसैन भारत की सफल महिला उद्यमियों में से एक हैं। उन्होंने सौंदर्य और स्वास्थ्य समस्याओं के लिए हर्बल उपचारों को लोकप्रिय बनाया। श्शहनाज़ हुसैन हर्बल्सश उनकी कंपनी का नाम था। यह दुनिया में अपनी तरह का सबसे बड़ा और संयुक्त राज्य अमेरिका से एशिया तक 100 से अधिक देशों में एक मजबूत उपस्थिति थी।
2. **इंद्र कृष्णमूर्ति नूयीः** पेप्सिको की अध्यक्ष और कार्यकारी अधिकारी फोर्ब्स पत्रिका के 2006 के सर्वेक्षण के अनुसार, दुनिया की चौथी सबसे शक्तिशाली महिला थी। फॉर्च्यून पत्रिका द्वारा उन्हें 2006 में मोस्ट पावरफुल वुमन इन बिजनेस का नाम भी दिया गया था।
3. **एकता कपूरः** बालाजी टेलीफिल्म्स के क्रिएटिव हेड, अभिनेता जीतेंद्र की बेटी और अभिनेता तुषार कपूर की बहन हैं। 2000 में स्टार प्लस पर प्रसारित होने वाले अपने सबसे प्रसिद्ध उद्यम श्क्यूंकी सास भी कभी बहू थीश के बाद, वह भारतीय टीवी पर साबुन ओपेरा की रेंज का पर्याय बन गई हैं।
4. **नीलम धवनः** माइक्रोसॉफ्ट इंडिया के प्रबंध निदेशक नीलम धवन देश में माइक्रोसॉफ्ट के बिक्री और विपणन कार्यों का नेतृत्व करते हैं। जब नीलम धवन हिंदुस्तान लीवर और एशियन पेंट्स जैसे एफएमसीजी की बड़ी कंपनियों में शामिल होना चाहती थी, दोनों कंपनियों ने धवन को अस्वीकार कर दिया क्योंकि वे मार्केटिंग के लिए महिलाओं को नियुक्त नहीं करना चाहते थे। लेकिन उस अस्वीकृति ने उनके मजबूत धैर्य और जुनून को नहीं रोका और आखिरकार उन्होंने कॉर्पोरेट क्षेत्र में अपनी उपस्थिति दर्ज की।
5. **सुलाजा फिरोदिया मोटवानीः** काइनेटिक इंजीनियरिंग लिमिटेड के संयुक्त प्रबंध निदेशक, कंपनी के समग्र व्यावसायिक विकास गतिविधियों के प्रभारी हैं। वह काइनेटिक मोटर कंपनी लिमिटेड और काइनेटिक मार्केटिंग सर्विसेज लिमिटेड की निदेशक भी हैं।
6. **किरण मजूमदार शॉः** किरण मजूमदार शॉ बायोटेक व्यवसाय में एक प्रमुख उद्यमी है। उसने ऑस्ट्रेलिया में मल्चिंग और ब्रूइंग का अध्ययन किया। इसके बाद उसने 1978 में अपनी ड्रीम यूनिट – ठप्ब्छ की स्थापना की।
7. **चंदा कोचरः** आप वर्तमान में आई सी आई सी आई की प्रबंध निदेशक और मुख्य कार्यकारी आधिकारी हैं।
8. **इंदु जैनः** इंदु जैन मीडिया ग्रुप बेनेट कोलमैन एंड कंपनी की चेयरपर्सन हैं।

9. **मल्लिका श्रीनिवासनः** मल्लिका श्रीनिवासन दक्षिण के 70 वर्ष पुरानी कंपनी अमलगमेशंस ग्रुप की चेयरपर्सन और सीईओ हैं।

तालिका 1: भारत के 10 प्रमुख महिला उद्यमियों की आय

रैंक	महिला उद्यमी	कुल आय करोड़ में	कंपनी	आवास
1.	रोशनी नदार मल्होत्रा	54,850	एचसीएल	नई दिल्ली
2.	किरण मजूमदार शॉ	36,600	बॉयकॉन	बेंगलुरु
3.	लीना गाँधी तेवारी	21,300	युएसवी	मुंबई
4.	नीलिमा मोटापरती	18,620	डीवीस लैबोरेट्रीज	हैदराबाद
5.	राधा वेम्बू	11,590	जोहो	चेन्नई
6.	जयश्री उल्लाल	10,220	एरिस्टा नेटवर्क्स	सैन फ्रांसिस्को
7.	रेनू मुंजल	8,690	हीरो फिनकोर्प	नई दिल्ली
8.	मलिका चिरायु अमीन	7,570	एलेम्बिक फर्मास्यूटिकल	वड़ोदरा
9.	अनु आगा और मेहर पुदुम्जी	5,850	थेरमैक्स	पूना
10.	फाल्गुनी नायर	5,410	नयका	मुंबई

(साभार इंडियन एक्सप्रेस)

कार्पोरेट जगत और महिला उद्यमिता की समस्याएँ

स्वतंत्रता के उपरांत भारत में महिलाओं ने पुरुष आधिपत्य के समस्त क्षेत्रों में अपनी उपस्थिति दर्ज की है। इस उपस्थिति के लिए महिलाओं को अभी काफी संघर्ष करने हैं और इस संघर्ष के दौरान उन्हें काफी मुश्किलों और समस्याओं का सामना करना होगा। इन समस्याओं का अध्ययन करते हुए उर्मिला के. ने निम्न तथ्यों का उल्लेख किया है –

1. **पुरुष प्रधान समाजः** महिला उद्यमियों के लिए सबसे बड़ी बाधा यह है कि वे महिलाएं हैं। एक प्रकार का पुरुष प्रधान सामाजिक आदेश व्यवसाय की सफलता की दिशा में उनके लिए एक महत्वपूर्ण चुनौती है।
2. **महिला उद्यमिता की क्षमताओं के बारे में संशयः** वित्तीय संस्थान महिलाओं की उद्यमिता क्षमताओं के बारे में संशय में हैं। बैंकरों का मानना है कि महिलाओं को पुरुषों की तुलना में अधिक जोखिम होता है। वित्तीय संस्थान महिला उद्यमियों के इस विश्वास को हतोत्साहित करते हैं कि वे किसी भी समय अपना व्यवसाय छोड़कर फिर से गृहिणी बन सकती हैं।
3. **मूर्त संपत्ति का आभावः** महिला उद्यमी अपर्याप्त वित्तीय संसाधनों और कार्यशील पूंजी से पीड़ित हैं। मूर्त सुरक्षा प्रदान करने में असमर्थता के कारण महिला उद्यमियों को बाहरी निधियों तक पहुंच की कमी है। बहुत कम महिलाओं के हाथ में मूर्त संपत्ति होती है।
4. **सामाजिक–सांस्कृतिक बाधाएँः** महिलाओं के पारिवारिक और व्यक्तिगत दायित्व कभी–कभी व्यावसायिक कैरियर में सफल होने के लिए एक बड़ी बाधा हैं। महिलाओं के पारिवारिक दायित्व भी उन्हें विकसित और विकासशील दोनों राष्ट्रों में सफल उद्यमी बनने से रोकते हैं।
5. **आत्मविश्वास की कमीः** महिलाओं में अपनी ताकत और क्षमता में आत्मविश्वास की कमी होती है। परिवार के सदस्य और समाज अपने उद्यमशीलता के विकास के साथ खड़े होने के लिए अनिच्छुक हैं। महिलाएं बहुत आलोचनात्मक होती हैं जब यह खुद की बात आती है – क्या मैं वास्तव में ऐसा कर सकती हूं, क्या मैं काफी अच्छा हूं, हो सकता है कि मुझे और अधिक सीखना पड़े, अन्य लोग इसे बेहतर कर सकें।
6. **भेदभावः** यह विश्वास करना कठिन है लेकिन हमारे समाज में अभी भी महिलाओं के साथ अलग तरह से व्यवहार किया जाता है। महिलाओं को समान काम करने वाले पुरुषों की तुलना में कम वेतन मिलता है; महिलाओं को पुरुषों के वर्चस्व वाले नेटवर्क तक पहुंच नहीं है।
7. **पुरुष–महिला प्रतियोगिताः** पुरुष–महिला प्रतियोगिता एक अन्य कारक है, जो व्यवसाय प्रबंधन प्रक्रिया में महिला उद्यमियों के लिए बाधाएं विकसित करती है। इस तथ्य के बावजूद कि महिला उद्यमी समय में अपनी सेवा को शीघ्र और सुपुर्द रखने में अच्छी हैं, पुरुष उद्यमियों की तुलना में संगठनात्मक कौशल की कमी के कारण महिलाओं को प्रतिस्पर्धा से बाधाओं का सामना करना पड़ता है।
8. **नवीनतम तकनीकी परिवर्तनों का ज्ञानः** नवीनतम तकनीकी परिवर्तनों का ज्ञान, ज्ञान और व्यक्ति का शिक्षा स्तर महत्वपूर्ण कारक हैं जो व्यवसाय को प्रभावित करते हैं। भारत में महिलाओं की साक्षरता दर पुरुष जनसंख्या की तुलना में निम्न स्तर पर पाई जाती है। विकासशील राष्ट्रों में कई महिलाओं को सफल उद्यमिता को प्रोत्साहित करने के लिए आवश्यक शिक्षा का अभाव है।
9. **सही सार्वजनिक/निजी संस्थानों की कमीः** अधिकांश सार्वजनिक और निजी प्रोत्साहन का दुरुपयोग किया जाता है और जब तक वह एक आदमी द्वारा समर्थित नहीं होता है तब तक महिला तक नहीं पहुंचता है।
10. कुछ व्यावसायिक कार्यों की उच्च उत्पादन लागत महिला उद्यमियों के विकास पर प्रतिकूल प्रभाव डालती है। उत्पादन की उच्च लागत दक्षता को कम करती है और महिलाओं के उद्यमों के विकास और विस्तार के रास्ते में खड़ी होती है।

निष्कर्ष

1. भारतीय समाज की संरचना पितृसत्तात्मक है।
2. भारतीय समाज में स्त्री उपेक्षित है।

3. भारतीय समाज की स्त्री निरंतर संघर्षशील है और समाज के भीतर पुरुष आधिपत्य को चुनौती दे रही ह।
4. पूँजीवाद और बाजारवाद के दौर में स्त्री के देह–बिम्बों को बाजार में प्रस्तुत किया जा रहा है।
5. बाजारवाद ने स्त्री का उत्पादीकरण किया है।
6. मनोरंजन उद्योग स्त्री के देह–बिम्बों को मुनाफा के लिए कर रहा है।
7. आधुनिककाल में स्त्री सशक्त हुई है जिसके कारण कार्पोरेट जगत में अपनी उपस्थिति प्रस्तुत कर रही है।
8. कार्पोरेट में स्त्री की उपस्थिति में बृद्धि हुई है।
9. कार्पोरेट जगत में पुरुष वर्चस्व होने के कारण स्त्री को लगातार कई स्तरों पर करना पड़ रहा है।
10. लैंगिक आधार पर महिला उद्यमियों को शोषित किया जाता है।

संदर्भ

1. मानव समाज, राहुल सांकृत्यायन, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, संस्करण, पे. 2016
2. हिंदी आलोचना की पारिभाषिक शब्दावली , डॉ. अमरनाथ, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण 2012, पे. 310–311
3. मनुस्मृति, ||2||9, टीकाकार डॉ. रामचंद्र वर्मा शास्त्री, विद्या बिहार प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण 2011, पे. 334
4. मनुस्मृति ||2||9 टीकाकार डॉ. रामचंद्र वर्मा शास्त्री, विद्या बिहार प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण 2011, पे. 334 पे. 334
5. मनुस्मृति, ||2||9 टीकाकार डॉ. रामचंद्र वर्मा शास्त्री, विद्या बिहार प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण 2011, पे. 334 पे. 334
6. आदमी निगाह में औरत, राजेंद्र यादव, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण 2016 पे. 15
7. आदमी निगाह में औरत, राजेंद्र यादव, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण 2016 पे. 16
8. चूड़ी बाजार में स्त्री, कृष्ण कुमार, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण 2017 पे. 80
9. https:@@mea-gov-in@articles&in&indian&media&hi-htm\dtl@24705@ (स्त्री शक्तिरू महिला उद्यमिता की शक्ति की पहचान – ज्योत्सना सूरी, मीडिया सेण्टर, विदेश मंत्रालय, भारत सरकार, जनवरी 20, 2015)
10. वहीं
11. वहीं
12. वहीं
13. वहीं
14. https:@@www-amarujala-com@columns@opinion@share&of&women&in&corporate कॉरपोरेट जगत में महिलाओं की हिस्सेदारी – रिजवान अंसारी, अमर उजाला] Published by: Raman Singh Updated Thu] 31 Oct 2019
15. वहीं
16. वहीं
17. भारत में महिला उद्यमियों की समस्याएं, उर्मिला के, बिसिनेस मैनेजमेंट आइडियास, https:@@www-businessmanagementideas-com@hi@entrepreneurship&2@problems&faced&by&women&entrepreneurs&in&india@21048